आज की मुरली का सहज सार ---------- Date:18-08-14

इस विश्व के सर्व गुरुओं कि भी सतगति करने वाले सुप्रीम सतगुरु ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - यह ब्रह्मा है सतगुरु की दरबार, इस भृकुटी में सतगुरु विराजमान हैं, वही तुम बच्चों की सतगति करते हैं.

भक्ति में जिसे पाने के लिए अज्ञानी मनुष्य अपनी मृत्यु से पहले, चार-धाम की यात्रा कहो या बारह ज्योंतिर्लींग की यात्रा करते है, काशी कल-वट भी खाते थे. समझते थे की मृत्यु के बाद, मनुष्य आत्मा जा के पर-ब्रह्म में लीन हो जायेंगी और ये कलयुगी दुनिया से उसे मुक्ति मील जायेगी. वही परमपिता-परमआत्मा शिव अभी संगम पर हम भाग्यशाली बच्चों को सच्ची गति-सतगति में जाने का रास्ता बता रहे हैं. वही सर्व आत्माओं का सुप्रीम बाप, पहले हम आत्माओं की पालना करते है, फिर सुप्रीम टीचर बनकर हम आत्माओं को सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देते है और जब हम आत्माये इस ईश्वरीय पढ़ाई को धारण कर संपूर्ण बन जाते है तो वह हमारे सुप्रीम सतगुरु बन हमें सतगति में भेज देते है.

बाबा अभी सुप्रीम सतगुरु के रुप में तिन मुख्य कार्य करते है.

- हम भाग्यशाली आत्माओं को सच्ची गति-सतगति अथवा कहें मुक्ति-जीवनमुक्ति में जाने का रास्ता दिखाते हैं यानी हमें सच्ची गति-सतगति में जाने का ज्ञान देते हैं.

- हम भाग्यशाली आत्माओं का हर-रोज मुरली में आते वरदानों से शृंगार करते है. जैसे के आज की मुरली में बाबा ने हमें हीरो पार्ट बजाने वाली विशेष आत्मा का वरदान दिया हैं और इसके लिए मुझे एक ही बात याद रखनी है की "मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ". अगर यह याद रहे तो हमारी आत्मा ओटोमेटिकली श्रेष्ठ बनने के संस्कार धारण करती चलेगी और सच में इस कल्प के ड्रामा में श्रेष्ठ पार्ट बजाने वाले देवी-देवता बन जायेंगे.

- जब हम भाग्यशाली आत्माये उस परमात्मा की याद में शरीर छोड़ते है तब वही सुप्रीम सतगुरु, सूक्ष्म देहधारी ब्रह्मा बाबा के भृकुटी में सवार होकर, हमें अपने नैनों की गोदी में बैठाकर सुक्ष्मवतन ले जाते है. जहॉ से वही सुप्रीम सतगुरु हमें बह्रमाबाबा के साथ परमधाम ले जायेंगे और फिर श्रीकृष्ण के साथ इस धरा पर फिरसे पार्ट बजाने भेज देंगे.

अपने सर्वोत्तम कार्य से हमारे जैसे साधारण मनुष्य आत्मा को श्रेष्ठ आत्मा बनाने वाले, ऐसे सुप्रीम सतगुरु को हम बच्चों का सत-सत नमस्कार हो, नमस्कार हो.

वाह मेरे सुप्रीम सतगुरु वाह और वाह मेरा भाग्य वाह.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .